P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/553 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VI February-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

मानस का हंस प्रासंगिकता

निशा सिंह
प्रधानाचार्या ,
बी0एड0 विभाग,
महात्मा गाधी उ0मा0 विद्यालय,
कानपुर

विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक,
बी0एड0 विभाग,
डी0एस0एन0 कॉलेज,
उन्नाव

सारांश

''मानस का हंस'' में तुलसी की प्रासंगिकता आन्तरिक और बाहरी दोनों रूपों में है। व्यक्ति के स्तर पर वह मानसिक संघर्ष है, और सामाजिक स्तर पर वह जड़ समाज से प्रबुद्ध व्यक्ति की एक वर्ग से दूसरे वर्ग की, परम्परा से प्रगति की, असत्य से सत्य की लड़ाई है। यह लड़ाई कहीं तो सक्रिय रूप धारण कर लेती है और कही विक्षोम, अस्वीकृति और घृणा के रूप में तुलसी के जीवन का आर्थिक अभाव, अपमानपूर्ण स्थितिया, छोटी जाति की पार्वती द्वारा उनका पालन पोषण, सतत भटकाव, धर्म और समाज की विकृति आदि ऐसो परिवेशगत सच्चाईया है, जो आज भी व्याप्त ह।''मानस का हंस'' तत्कालीन परिवेश के जीवन्त चित्रण के माध्यम से आज के परिवेश को भी प्रासगिक है।

मुख्य शब्द : हंस प्रासंगिकता, नागर जी, तुलसी

परिचय

जीवन साहित्य सदैव अपने युग और समाज से रस ग्रहण करता है। उपन्यासकार इतिहास की घटनाओं, पात्रो और वातावरण को लेकर भी इन सबका संयोजन इस ढग से करता है कि वर्तमान जीवन के प्रश्न और मानव मूल्य मुखर हो जाये। अमृतलाल नागर एक ऐसे ही उपन्यासकार है। 'मानव का हंस' में अमृतलाल नागर ने तुलसी के जीवन की कथा अद्भुत ढंग से कही है। उन्होनें तुलसी के जीवन के मार्मिक प्रसंगो को लेकर या मार्मिक प्रसंगो की उद्भावना कर तुलसी की विविध संवेदनाओं का अंकन किया है। तुलसी काव्य मर्मज्ञ नागर जी तुलसी के काव्य के भीतरी प्रसंगो से तुलसी की मानकिता की रचना करते है। साथ ही उन्होंने तुलसी के जीवन और चरित्र के साथ जुड़ी हुई अलौकिक घटनाओं को लौकिक और मानवीय रूप देने का प्रयत्न किया हैं।

सार्थक और विशिष्ट कृति वह है जो प्रासंगिक है। प्रासंगिकता (लेखक के) युग के केन्द्रीय चेतना और प्रकृति की पहचान से प्राप्त होती है। प्रासंगिकता कही तो युगीन समस्याओं, आकांक्षाओं और सम्बन्धों से सम्बन्धित होती है, कहीं चरित्र की नवीन आन्तरिकता से। नागर जी ने तुलसीकाल के फलक पर अनेक चरित्रों को चित्रित किया है। कुछ ऐतिहासिक है, कुछ काल्पनिक। सारे पात्र जीवन्त और यथार्थ है। इन पात्रों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक जीवन और मानव चरित्रों के अनेक आयाम उद्घाटित किये है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रशंसा करते हुये श्री रामदरश मिश्र जी अपनी पुस्तक हिन्दी उपन्यासः एक अन्त यात्रा में कहते है– ''मानस का हंस एक सार्थक और विशिष्ट उपन्यास है, इसलिये इसे हम मात्र तुलसी के प्रामणिक जीवनी के उपन्यास के रूप में पड़कर सन्तोष नहीं करना चाहते, हम उन बिन्दुओं की भी तलाश करना चाहते है, जो तुलसी के जीवन पर आधारित, इस उपन्यास को ऐतिहासिक दस्तावेज बनने से बचाकर एक ऐसी सर्जनात्मक कृति का रूप दे सके है, जो आज तक पाठक के लिये भी प्रासंगिक है। इस प्रासंगिकता के लिये लेखक ने तुलसी को वह रूप दिया है, जिसे ऐतिहासिक दृष्टि या धार्मिक दृष्टि से तुलसी भक्त और धार्मिक स्वीकार नहीं करना चाहते।

तुलसी के राम और काम के द्वन्द्व को दिखाना इन लोगों को नहीं भाता। ऐसी स्थितियों के कारण ही आचार्य विष्वनाथ मिश्र कहते है। ''भक्तों और साधकों पर उपन्यास आदि नहीं लिखे जाने चाहिये, किन्तु जब उन पर लिखा जायेगा तब उन्हें वह मानवीय रूप देना ही होगा, जो उन्हें साहित्य के अनेक पाठको के लिये प्रासंगिक बनाता हैं।''

''मानस का हंस'' में तुलसी की प्रासंगिकमा आन्तरिक और बाहरी दोनों रूपों में है। व्यक्ति के स्तर पर वह मानसिक संघर्ष है, और सामाजिक स्तर पर वह जड़ समाज से प्रबुद्ध व्यक्ति की एक वर्ग से दूसरे वर्ग की, परम्परा से प्रगति की, असत्य से सत्य की लड़ाई है। यह लड़ाई कहीं तो सक्रिय रूप धारण कर लेती है और कही विक्षोम, अस्वीकृति और घृणा के रूप में तुलसी के जीवन का आर्थिक अभाव, अपमानपूर्ण स्थितिया छोटी जाति की पार्वती द्वारा उनका पालन

पोषण, सतत भटकाव, धर्म और समाज की विकृति आदि ऐसी परिवेशगत सच्चाईया है, जो आज भी व्याप्त है।

नागरजी के आज की संघर्ष और तनावपूर्ण मानसिक और परिवेशगत सच्चाईयों के निर्वहन में तुलसी के व्यक्तित्व की मूल ऊजा की उपेक्षा नही की है। यही कारण है कि तुलसी इन वास्तविकताओं की प्रक्रियाओं से गुजरते हुये भी उनसे पराभूत नहीं होते। इसीलिये ''फैशनपरस्त आधुनिकता का हिमायती कहलता है कि ''मानस का हंस'' प्रासगिक इसलिये नहीं बन सका है, क्योंकि इसमें निरन्तर तुलसी का उठना दिखाया गया है। आधुनिकता तो टूटे हुये, हारे हुये छोटे–छोटे लोगों की कथा है। मात्र टूटना ही आज के लिये प्रासगिक है।'' (हिन्दी उपन्यासः एक अर्न्तयात्रा) किन्तु क्या यह टूटना ही लक्ष्य है? टूटना आज के मानव की विवशता है, कामना नहीं। वह भी इस टूटना से उत्पन्न रिक्तता को भरना चाहता है। अतः टूटना और रिक्तता को भरना दोनों ही प्रसांगिक है। तुलसी प्रासगिकता के दोनों तकजों को पूरा करते है। उपन्यास मे तुलसी का जनसंघर्ष और परिवेशगत कुरूपता तथा उससे तुलसी की टकराहट एक ही व्यक्तित्व के अन्तर्गत समाविष्ट हो गये है। ''तुलसी के राम केवल साधक के हृदय के भीतर अनुभूत होने वाले सत्य नहीं है, वे लोक में व्याप्त अंमगल, अधर्म, सत्य के प्रसार के बीच मूर्त होने वाले मंगल, धर्म और सत्य के स्वरूप भी है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि ''मानस का हंस'' तत्कालीन परिवेश के जीवन्त चित्रण के माध्यम से आज क परिवेश को भी प्रासगिक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. मानस का हंस. अमृतलाल नागर दृ
2. ISBN NO.-9788170282495
3. मानस का हंस. राजपाल दृ
4. ISBN NO.-8170282497
5. BIBLIOGRAPHY OF TULSIDAS-
6. ISBN NO.104674472930098
7. मानस सुभाषित
8. तुलसी काव्य में साहित्यिक अभिप्राय लेखक जनार्दन उपाध्याय
9. तुलसी सुभाषित